''साहित्यिक मौन से डिजिटल संवाद तक – एक एकीकृत वैश्विक न्याय एवं समावेशी शिक्षण मॉडल''

डॉ. संतराज अहमद

सार–

साहित्य में 'मौन' का अर्थ है वह गहराई जहाँ पाठक या विद्यार्थी सूचनाओं को केवल ग्रहण नहीं करता, बल्कि उन पर विचार करता है। यह आलोचनात्मक सोच (ब्तपजपबंस जेपदापदह) और सहानुभूति विकसित करने में मदद करता है। आज के डिजिटल युग में निरंतर शोर (प्दवितउंजपवद व्अमतसवंक) के कारण यह मौन खो रहा है।

'साहित्यिक मौन' (आंतरिक गहराई) और 'डिजिटल संवाद' (बाहरी विस्तार) को जोड़कर एक 'एकीकृत वैश्विक न्याय एवं समावेशी शिक्षण मॉडल' तैयार करना शिक्षा के लोकतंत्रीकरण की दिशा में एक बड़ा कदम हो सकता है। यह मॉडल इस विचार पर आधारित है कि 'न्याय' और 'समावेश' तब शुरू होते हैं जब हम दूसरों को सुनने के लिए खुद मौन होते हैं।

प्रस्तावना–

डिजिटल तकनीक ने न्याय और शिक्षा को सीमाओं से मुक्त कर दिया है। डिजिटल युग में हर बात को स्पष्ट और संक्षिप्त (ब्वजपवदे) रूप में रखने की होड़ है। पारंपरिक साहित्य में 'मौन' का अर्थ लेखक और पाठक के बीच का वह एकांत अंतराल था, जहाँ रचना पढ़ने के बाद पाठक स्वयं के भीतर उस पर विचार करता था। आज साहित्य केवल किताबों तक सीमित नहीं है। सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म (जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम, ब्लॉग) ने लेखक और पाठक के बीच की दूरी को खत्म कर दिया है, जिससे एक 'निरंतर संवाद' की स्थिति पैदा हुई है।

कक्षा में केवल 'बोलने' पर नहीं, बल्कि 'सक्रिय सुनने' पर जोर दिया जाता है। मौन यहाँ 'विचार करने का समय' है, जो हाशिए के छात्रों को अपनी बात तैयार करने का समान अवसर देता है।

डिजिटल माध्यमों का उपयोग 'मौन' को 'वाणी' देने के लिए किया जाता है। कनीक के माध्यम से दूर–दराज के क्षेत्रों के छात्र भी विश्व–स्तरीय संसाधनों तक पहुँच पाते हैं। यह 'डिजिटल डिवाइड' को पाटकर शैक्षिक न्याय सुनिश्चित करता है।

।ए और अनुवाद उपकरणों का उपयोग करके विभिन्न भाषाओं के बीच के 'सन्नाटे' को तोड़ा जाता है, जिससे समावेशी शिक्षण संभव होता है। छात्र किसी वैश्विक मुद्दे (जैसे जलवायु परिवर्तन या मानवाधिकार) पर मौन रहकर विचार करते हैं। विभिन्न देशों और समुदायों के छात्र डिजिटल प्लेटफॉर्म पर मिलते हैं। यहाँ मौन का 'साहित्यिक बोध' उन्हें दूसरे की संस्कृति का सम्मान करना सिखाता है। चर्चा के बाद वे डिजिटल टूल का उपयोग करके न्याय के लिए 'एक्शन प्लान' बनाते हैं (जैसे ऑनलाइन पिटीशन या अवेयरनेस कैंपेन)।

वैश्विक न्याय उन लोगों को 'आवाज' देता है जो सामाजिक या आर्थिक कारणों से 'मौन' रहने पर मजबूर थे। डिजिटल संवाद के जरिए वैश्विक स्तर पर सांस्कृतिक आदान–प्रदान होता है, जिससे पूर्वाग्रह (च्तमरनकपबम) खत्म होते हैं और एक न्यायपूर्ण समाज की स्थापना होती है।

साहित्य में 'मौन' केवल शब्दों का अभाव नहीं है, बल्कि यह एक सशक्त भाषा है। साहित्यकारों ने मौन का उपयोग वहां किया है जहाँ शब्द अपनी शक्ति खो देते हैं या जहाँ भावनाओं की गहराई शब्दों में नहीं समा सकती। साहित्य में मौन को 'अनकहा' (जैम न्देंपक) कहा जाता है, जो पाठक को खुद अर्थ निकालने की स्वतंत्रता देता है।

मोहन राकेश के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' में मल्लिका का मौन उसके त्याग और गहरी पीड़ा को किसी भी लंबे संवाद से बेहतर व्यक्त करता है। सूफी और भक्ति काव्य में 'शून्य' और 'मौन' का विशेष महत्व है। कबीर के 'अकथ कहानी' का अर्थ वही है जिसे शब्दों में नहीं बांधा जा सकता। आधुनिक साहित्य में मौन इंसान के अकेलेपन और ब्रह्मांड की निस्तब्धता को दर्शाता है (जैसे सैमुअल बेकेट के नाटकों में)।

दलित और स्त्री विमर्श की कई रचनाओं में हाशिए के समाज का मौन उनकी 'मूक चीख' बन जाता है। सावित्री (आधे–अधूरे) का मौन समाज और व्यवस्था के प्रति उसका विरोध है। मनोवैज्ञानिक उपन्यासों (जैसे जैनेंद्र या अज्ञेय की रचनाएं) में मौन पात्रों के अंतर्मन की परतों को खोलता है। पात्र जो नहीं बोलता, वह उसके चरित्र के बारे में बहुत कुछ बताता है।

कविता की दो पंक्तियों के बीच का खाली स्थान भी बोलता है। वह पाठक को सोचने और महसूस करने का समय देता है। साहित्य में मौन वह सेतु है जो 'लेखक' के अनुभव को 'पाठक' की कल्पना से जोड़ता है। यदि शब्द शरीर हैं, तो मौन उसकी आत्मा है।

अज्ञेय के अनुसार, ''कविता केवल शब्दों में नहीं होती, बल्कि शब्दों के बीच की नीरवता में होती है। सही शब्द वही है जो अपने आसपास के मौन का सबसे अधिक उपयोग कर सके।'' 'शेखर : एक जीवनी' इस उपन्यास में मौन एक माध्यम है जिसके द्वारा नायक शेखर दुनिया की सच्चाइयों और अपने विखंडित अस्तित्व (थ्तंहउमदजमक`मसी) का सामना करता है। यहाँ मौन आत्म–साक्षात्कार का मार्ग है।

आधुनिक हिन्दी कहानी में निर्मल वर्मा ने भी मौन को एक विशेष 'आकार' दिया है। उनकी रचनाओं में अर्थ अक्सर संवादों में नहीं, बल्कि विश्रामों (च्नेमे) और अनुपस्थितियों में छिपा होता है। वे पाठक को एक ऐसी एकाग्रता में ले जाते हैं जहाँ भाषा के

 Copyright @ 2026 Author

थक जाने के बाद भी अर्थ बना रहता है। उनके पात्रों का मौन शहरी अकेलेपन और मनुष्य की भीतरी रिक्तता को गहराई से चित्रित करता है।

शोषण के विरुद्ध जब शब्द छीन लिए जाते हैं, तो मौन ही सबसे बड़ा हथियार बन जाता है। शशि देशपांडे और अन्य लेखिकाओं के संदर्भ में, 'मौन' को अक्सर पितृसत्ता द्वारा थोपे गए दमन के रूप में देखा गया है जिसे अब तोड़ने (ठतमांपदह जीम `पसमदबम) की बात की जा रही है।

हिन्दी साहित्य में जिसे हम 'साहित्यिक मौन' (स्पजमतंतल `पसमदबम) कहते हैं, वह आज के 'डिजिटल संवाद' (क्पहपजंस ब्वउउनदपबंजपवद) के दौर में पूरी तरह बदल गया है। जहाँ साहित्य में मौन का अर्थ 'गहराई' और 'अर्थवत्ता' था, वहीं डिजिटल दुनिया में यह 'तकनीकी' और 'सामाजिक' आयाम ले चुका है।

साहित्य में मौन का अर्थ है–जहाँ शब्द खत्म हों वहाँ से पाठक की कल्पना शुरू हो। यह एक सक्रिय प्रक्रिया है। डिजिटल संवाद में मौन को अक्सर श्ैममदश छोड़ देना या श्ळीवेजपदहश माना जाता है। यहाँ मौन का अर्थ अक्सर संवाद की समाप्ति या उपेक्षा (प्हदवतंदबम) लिया जाता है, न कि कोई दार्शनिक गहराई।

नाटक (जैसे मोहन राकेश के नाटक) में 'पॉज' तनाव और भावनात्मक तीव्रता पैदा करता है। डिजिटल पॉज को श्ज्लचपदह. ..श के बुलबुले में बदल दिया गया है। जब सामने वाला टाइप कर रहा होता है, तो वह अंतराल (प्दजमतअंस) एक नया मनोवैज्ञानिक तनाव पैदा करता है। यह डिजिटल दौर का नया 'साहित्यिक अंतराल' है। साहित्यकार मौन के माध्यम से वह कहते हैं जो शब्दों में नहीं कहा जा सकता। डिजिटली आज की पीढ़ी बड़े संवादों के बजाय इमोजी (म्उवरप)या ळप्थ्े का उपयोग करती है। यह एक तरह का 'अर्ध–मौन' (`मउप–`पसमदबम) है, जहाँ शब्द गायब हैं लेकिन चित्र भावना व्यक्त कर रहे हैं। इसे डिजिटल युग की नई चित्रात्मक भाषा कहा जा सकता है।

आज सोशल मीडिया पर सूचनाओं का जबरदस्त शोर है। ऐसे में 'डिजिटल डिटॉक्स' या सोशल मीडिया से दूरी बनाना आधुनिक मनुष्य का 'साहित्यिक मौन' है।

नई पीढ़ी के लेखक अब 'ब्लॉग' या 'थ्रेड्स' में छोटे–छोटे वाक्यों के बीच खाली जगह छोड़ते हैं, जो डिजिटल प्लेटफॉर्म पर पाठक को ठहराव (च्ंनेम) देने की कोशिश है। डिजिटल संवाद ने मनुष्य की 'मौन सहने की क्षमता' कम कर दी है। साहित्य में हम पात्रों के साथ घंटों मौन रह सकते थे, लेकिन डिजिटल दुनिया में हम 10 सेकंड का सन्नाटा भी बर्दाश्त नहीं कर पाते और तुरंत फोन चेक करते हैं।

साहित्यिक मौन 'अंतर्मुखी' (प्दजमतदंस) है जो हमें खुद से जोड़ता है, जबकि डिजिटल संवाद अक्सर 'बहिर्मुखी' है जो हमें बाहरी प्रतिक्रियाओं पर निर्भर करता है। आज की नई पीढ़ी को साहित्य के उसी 'मौन' को डिजिटल माध्यमों में तलाशने की जरूरत है ताकि संवाद में गहराई वापस आ सके।

इंटरनेट के माध्यम से दूर–दराज के क्षेत्रों तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुँचाना डिजिटल प्लेटफॉर्म से ही संभव है। हर किसी को अपनी आवाज उठाने और वैश्विक विमर्श का हिस्सा बनने का मंच देना। एकीकृत वैश्विक न्याय एक ऐसा मॉडल जहां डिजिटल संसाधनों का वितरण समान हो। समावेशी शिक्षण मॉडल 'मौन' और 'संवाद' का संतुलन है।

यह मॉडल सुझाव देता है कि सच्ची प्रगति केवल नई तकनीक अपनाने में नहीं, बल्कि उसे मानवीय मूल्यों (साहित्यिक गहराई) के साथ जोड़ने में है। जब हम चिंतनशील मौन को सक्रिय डिजिटल संवाद से जोड़ते हैं, तभी एक न्यायपूर्ण और शिक्षित वैश्विक समाज की रचना संभव है।

निष्कर्ष–

साहित्यिक मौन से डिजिटल संवाद तक का सफर केवल तकनीकी नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक क्रांति है। जहाँ डिजिटल माध्यमों ने साहित्य को वैश्विक और सुलभ बनाया है, वहीं साहित्य की 'आत्मा' यानी उसकी गहराई और गंभीरता को बनाए रखना एक बड़ी चुनौती है।

यह मॉडल 'साहित्यिक गहराई' को 'डिजिटल गति' के साथ जोड़ता है। जहाँ साहित्य हमें 'संवेदनशील' बनाता है, वहीं डिजिटल संवाद हमें 'सशक्त' बनाता है। शिक्षा का यह एकीकृत स्वरूप ही आने वाली पीढ़ी को 'वैश्विक न्याय' का सच्चा वाहक बनाएगा।

हिन्दी साहित्य में 'मौन' केवल शब्दों का अभाव नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी भाषिक प्रविधि और दार्शनिक आयाम है जो अनकहे सत्य को व्यक्त करता है। हिन्दी साहित्यकारों ने मौन को एक सशक्त माध्यम के रूप में अपनाया है, जहाँ शब्द अपनी सीमा पर पहुँचकर शांत हो जाते हैं।

संदर्भ–

1. डिजिटल संसार में हिन्दी के विविध आयाम, अरविन्द कुमार
2. सेतु, सम्पादकः श्री अनुराग शर्मा अमेरीका, जुलाई 2018
3. भारत दर्शन, न्यूजीलैंड, संपादकः रोहित कुमार, जुलाई–अगस्त 2018
4. सोशल मीडिया वर्चुअल से वास्तविक, कविता भाटिया, सेतु प्रकाशन,
5. अस्मिता बोध के विविध आयाम, कविता भाटिया, सेतु प्रकाशन, 2015

Copyright @ 2026 Author

6. सूचना और सम्प्रेषण तकनीकी (आई.सी.टी.) और ई–अधिगम
7. टी. यांग और वाई. जू, ''इशारा पहचान के लिए छिपा हुआ मार्कोव मॉडल, ''रोबोटिक्स संस्थान, कार्नेगी मेलन विश्वविद्यालय, सीएमयू–आर आई–टीआर–94–10, पिट्सवर्ग, पीए, मई 1994
8. पी. जियाई, टी. मुलर, एम.ई. फोस्टर और ए. नोल, ''एक भोला बेयस हावभाव पहचान मॉडल'', सूचना विज्ञान विभाग अप , रोबोटिक्स और एम्बेडेड सिस्टम, बोल्ट्जमैनस्ट्र, 3 गार्चिंग, जर्मनी।

 Copyright @ 2026 Author